ॐ

चिकित्सीय विशेषताओं, आध्यात्मिक रहस्यों का खजाना

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष आध्यात्मिक रहस्यों से परिपूर्ण है। इसे आजकल थेरेपी के रुप में प्रयुक्त किया जा रहा है। रुद्राक्ष द्वारा मानवीय उपचार पद्वति अत्यधिक प्राचीन, निरापद व अत्यंत लोकप्रिय है। इसे धारण करने से अनेक प्रकार के शारिरिक एवं मानसिक विकारों से मुक्ति मिलती है। भारत व नेपाल में ही नहीं एशिया सहित विश्व के अनेक देशों में इसके चिकित्सीय प्रयोग किये जा रहे हैं, जिनके असाधारण परिणाम मिले हैं।

शिव पुराण के अनुसार रुद्राक्ष की उत्पत्ति रुद्र की आंखो से मानी जाती है। रुद्राक्ष अर्थात् रुद्र की आंख। सर्वप्रथम भुसुण्ड जी ने रुद्राक्ष की उत्पत्ति तथा उसके धारण का प्रतिफल पूछा। जिसका उत्तर कालाग्निरुद्र भगवान ने विस्तार से प्रदान किया। भगवान ने कहा जब मैं त्रिपुरासुर राक्षस को मारने के लिये आंख बंद कर समाधिस्थ हुआ, उसी समय आंख से जल की बूंदे पृथ्वी पर गिरीं। वे ही बूंदे रुद्राक्ष बन गई। वे बूंदे महारुद्राक्ष का पेड़ बनकर भक्तों पर कृपा करने के लिये अचल हो गई। जो भक्त इसको धारण करता है, यह उसके दिन व रात में किये पापों का हरण कर लेता है। रुद्राक्ष को " **ब्लू मार्बल** " के नाम से भी जाना जाता है। इस चमत्कारिक वृक्ष का वानस्पतिक नाम है – एलिओकार्पस गैनीट्रस। इसे भूतजाशन भी कहते हैं। इसके औषधीय गुण अद्भुत है। इसलिये यह वैदिक एवं महाभारत काल में समग्र चिकित्सा पद्वति के रुप में प्रयुक्त होता था। आजादी से पूर्व भारत में इसे थेरेपी के रुप में प्रयोग किया जाता था। गुलामी के दौरान यह उपेक्षित पड़ा रहा फिर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सन् 1954 में किर्जीकरण वसुंधरा एवं जादकर्णी आदि ने पुनः इस पर अनुसंधान प्रारंभ किया।

रुद्राक्ष के संबंध में कार्य करने वालों में थायरिल (1966) धर एवं उनके सहयोगी (1968) सरकार एवं उनके सहयोगी (1972–73) भट्टाचार्य (1975) पांडे और महाचार्य (1985), डेविड ली (1991, 1996–1998) आदि प्रमुख है। सन् 1966 में " **सेन्ट्रल काउन्सिल ऑफ आयुर्वेदिक रिसर्च** ", नई दिल्ली ने आयुर्वेदिक औषधि निघंटु प्रकाशित किया, जिसमें रुद्राक्ष थेरेपी का उल्लेख किया गया था। इसके पश्चात डॉ. एम.एल. धर ने सन् 1968 में रुद्राक्ष की वॉयोलोजिकल विशेषताओं पर अनुसंधान किया। वर्तमान में डॉ. डेविड ली इसके रासायनिक गुणों का अध्ययन कर रहे हैं। इंटर नेशनल यूनिवर्सिटी फ्लोरिडा के डॉ. ली इसकी बहुगुणी विशिष्टता को आश्चर्यजनक मानते है।

आगे जाकर भगवान कालाग्नि ने रुद्राक्ष के मुखों के भेद, उनका स्वरुप व इनसे क्या फल मिलता है, इसका विस्तार से उल्लेख किया है।

इस पुराण के अनुसार रुद्राक्ष एकमुखी से चौदहमुखी तक पाये जाते हैं। एकमुखी व एकादश मुखी (ग्यारह मुखी) अत्यंत दुर्लभ होते हैं।

- ❖ एक मुखी रुद्राक्ष साक्षात् परमतत्व का रुप है। ये सर्वगुण सम्पन्न एवं स्वयं सिद्व हैं। इन्द्रियों को वशीभूत करते हुये जो भी इसे धारण करता है, वह परातत्वपरमतत्व शिव में विलीन हो जाता है।
- ❖ द्विमुखी रुद्राक्ष अर्धनारीश्वर रुप कहा गया है। यह ऐश्वर्य, मनोरथ, मोक्ष और वैभव दाता है।
- ❖ त्रिमुखी रुद्राक्ष धन–विद्या में लाभ एवं ज्वरनाशक है। अग्निजय स्वरुप कहा जाता है।
- ❖ चतुर्थमुखी आरोग्य, विद्या, धन, ज्ञान वर्धक एवं जीव हत्या का पापनाशक माना जाता है। यह चतुर्भज भगवान का स्वरुप है।
- ❖ पंचमुखी शिव का स्वरुप है। इसे कालाग्रिन भी कहते हैं, जो शिव को अति प्रिय है। यह पाप–ताप नाशक एवं स्वास्थ्यरक्षक है।
- ❖ छः मुखी कार्तिकेय का स्वरुप है। इसे धारण करने से महालक्ष्मी की कृपा होती है। आरोग्यता प्राप्त होती है। ज्ञानवान मनुष्य इसे गणेश रुप मानते हैं। इसलिये वुद्विमान मनुष्य विद्या, बुद्वि एवं लक्ष्मी की वृद्वि के लिये इसे धारण करें।
- ❖ सप्तमुखी सप्तलोक, सप्तमातृशक्ति का स्वरुप होता है। इससे महान सम्पत्ति व अत्युज्म आरोग्य प्राप्त होता है। यश, प्रतिष्ठा, मान–सम्मान व ऐश्वर्यदाता है।
- ❖ अष्टमुखी रुद्राक्ष आयु की वृद्वि करने वाला माना जाता है। यह आठ माताओं का स्वरुप है। इसे अष्टवसु प्रिय भी कहा गया है। यह गंगाजी को प्रीतिकर है। सत्यवादी मनुष्य इसे धारण करता है, तो तीनों की कृपा उसे मिलती है।
- ❖ नौमुखी अभय बनाता है। इसे नौ शक्तियों वाला देवता कहते है। जिसके दर्शन से ही नौ शक्तियों की कृपा प्राप्त होती है।
- ❖ दसमुखी यम देवता का रुप है। इसका दर्शन ही शांति देने वाला होता है। यह सर्वग्रह दोषनाशक प्रेत एवं सर्प वाधा से मुक्त करता है।
- ❖ एकादश मुखी सुख व विजय दाता है। यह रुद्र देवता का स्वरुप है, जो सौभाग्य सम्बर्धन करने वाले होते हैं।
- ❖ द्वादश मुखी रुद्राक्ष भगवान महाविष्णु का स्वरुप हैं, जो निर्धनता, दरिद्रता का नाशक एवं अभयकारक है।
- ❖ त्रयोदशी मुखी मनोकामनाओं व सिद्वियों का प्रदाता है। इसे धारण मात्र से ही कामदेव की कृपा प्राप्त होती है। यह सुपुत्रदाता एवं वशीकरण कारक है।
- ❖ चर्तुदश मुखी रुद्राक्ष की उत्पत्ति साक्षात् रुद्र भगवान के नेत्रों से हुई है। यह आरोग्यदायक व सर्वरोग हारी है एवं संकटमोचन माना जाता है।

रक्तचाप में सभी प्रकार के रुद्राक्ष उपयोगी माने जाते है।

रुद्राक्ष पर खोज करने वाले वैज्ञानिकों ने इसके किमोफार्माकोलांजिकल गुणों का उल्लेख किया है। इस विशेषता के कारण यह हृदय रोगों के निवारण, एण्टीकोलेस्ट्राल, मस्तिष्क पर प्रभाव डालने वाला, मांसपेशियों को स्फूर्ति देने वाला, प्रतिरोधक, शक्तिवर्धक, वायोएनर्जी को बढ़ाने वाला व चक्रों पर प्रभाव डालने वाला होता है। जैव विज्ञानियों ने इस पर अनुसंधान करने पर पाया कि, यह एण्टीवायरल, एण्टीवैक्टीरियल, एण्टीकैनसप्स, एण्टीफंगल तथा एण्टीप्रोटोजोअल है। वैज्ञानिक इसके इतने सारे गुणों को एक साथ देखकर हतप्रभ हैं।

रुद्राक्ष स्नायुतंत्र पर भी प्रभाव डालता है, जिससे मानसिक स्थिति स्थिर व प्रसन्न रहे। डॉ. डेविड ली के अनुसार रुद्राक्ष में डायइलेक्ट्रिक गुण विद्यमान होता है, क्योंकि यह विद्युत ऊर्जा के आवेश को संचित करता है, जिससे इसमें स्थायी चुंबकीय गुण पाया जाता है। इसकी प्रकृति इलेक्ट्रोमैग्नेटिक एवं परामैग्नेटिक है। इसकी डायनेमिक पोलेरिटी विशेषता अद्‌भुत है।

आयुर्वेद के अनुसार यह वात, पित्त व कफ रुपी त्रिदोष एवं सप्तधात्विक दोषों का शमन करता है। इस तरह रुद्राक्ष के अनगिनत व असंख्य प्रयोग है, जिससे मानव कल्याण हो सकता है।

रुद्राक्ष धारण करने वालों को लहसुन, प्याज, शराब, मांस आदि का त्याग कर देना चाहिये। रुद्राक्ष के मूल में ब्रह्म नाल अर्थात् छिद्र वाले भाग में विष्णु, मुख अर्थात् रुद्राक्ष में पड़ी रेखाओं में शिव तथा कष्टक रुप बिन्दुओं में समस्त देवताओं का निवास होता है।

रुद्राक्ष के विषय में कहा गया है कि, मजबूत, चिकने, समान रुप से गोलाई लिये हुये, मोटे कांटो से युक्त रुद्राक्ष शुभ होते हैं, जिसमें कीड़ा लगा हो, जो टूटा–फूटा हुआ है, कांटो से रहित हो, जो ठीक न लगता हो, वह रुद्राक्ष त्याज्य है। जिसमें प्राकृतिक छेद हो, वह उत्तम है। पुराणों में आंवले के बराबर रुद्राक्ष को श्रेष्ठ माना गया है। बेर के बराबर रुद्राक्ष मध्यम व चने के बराबर रुद्राक्ष को विद्वानों ने अधम कहा है।

इस तरह रुद्राक्ष अति पवित्र व शक्तिशाली है, जिसका उचित रीति से प्रयोग करने पर वह वरदान सिद्व होगा। हमें इसकी पूजा करना चाहिये व इसके वृक्ष भी जगह–जगह स्थापित करना होगा। एक वृक्ष जब हम रुद्राक्ष का लगाते हैं, तब एक ओर वृक्ष हमारे हृदय में स्थापित हो जाता है व हम भगवान शंकर के कृपापात्र बनते चले जाते हैं।

डॉ. श्रीमति कुसुम गुप्ता,
21, गायत्री नगर, ग्वालियर